



शिक्षा रिपोर्ट

आपकी शिक्षा, बुद्धि व ज्ञान-दिशा का विश्लेषण

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:01

॥ पारस वाणी ॥

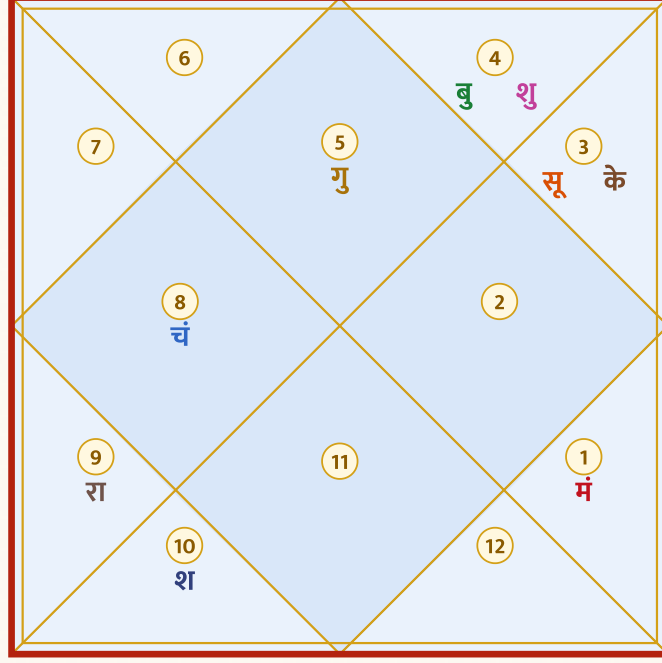
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) • लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035



शिक्षा-कुंडली परिचय

अ ध्या य 1

शिक्षा-कुंडली परिचय

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में शिक्षा और बुद्धि का चित्र बेहद रोचक है — एक ओर लग्न में गुरु का बल है, दूसरी ओर बुध और शुक्र बारहवें भाव में बैठकर कुछ जटिलता लाते हैं। यह कुंडली एक ऐसे मन की है जो सीखने की क्षमता तो गहरी रखता है, पर उसे सही दिशा व अनुशासन की ज़रूरत पड़ती है।

बुद्धि और सीखने की नींव — लग्न में गुरु

सिंह लग्न में गुरु बैठे हैं — मित्र राशि में, युवा अवस्था में, और बल भरपूर (9.49 रूप, न्यूनतम 6.5)। यह आपकी कुंडली की सबसे बड़ी शक्ति है। गुरु पंचम भाव के स्वामी भी हैं और लग्न में बैठकर पंचम की बुद्धि व संतान-योग सीधे आपके व्यक्तित्व में घोलते हैं। शास्त्र में इस स्थिति को मेधा और विद्या का स्वाभाविक वरदान माना गया है। साथ ही गुरु पंचम और सप्तम भाव पर अपनी दृष्टि डालते हैं — इससे पंचम भाव (बुद्धि, विद्या, पूर्व-पुण्य) को एक बलवान शुभ दृष्टि मिल रही है। पंचम भाव का शोधित अष्टकवर्ग बल 5 बिंदु है और भाव-बल 10.24 — यह बताता है कि विद्या की नींव ठीक-ठाक है।

बुध और शुक्र — प्रतिभा, पर थोड़ी उलझन के साथ

विद्या का प्रमुख कारक ग्रह बुध आपके बारहवें भाव में कर्क राशि में हैं — शत्रु राशि में। बुध का षड्बल पर्याप्त (7.56 रूप) है पर अवस्था कुमार है, अर्थात् फल आधा मिलता है। इसका सीधा अर्थ यह है कि वाणी, लेखन और तर्क-शक्ति में आप सक्षम हैं, पर यह क्षमता पूरी तरह बाहर आने में समय और प्रयास लगता है। बारहवाँ भाव एकांत, गहराई और विदेश का घर है — इसलिए आप अकेले में अधिक सीखते हैं, भीड़ में कम। बुध की दृष्टि छठे भाव पर है, जो बताता है कि मेहनत और व्यवस्था से बुध के दोष को काफ़ी हद तक सँभाला जा सकता है।

नवांश (D9) में बुध मकर राशि के पाँचवें भाव में हैं — यह स्थिति बुद्धि को व्यावहारिक और धैर्यशील बनाती है, भले ही जन्म-कुंडली में बुध कमज़ोर दिखें। D9 यह कह रहा है कि गहरी पढ़ाई और अनुशासित अभ्यास से बुध का असली फल मिलता है।

नवम भाव — उच्च शिक्षा और भाग्य का द्वार

नवम भाव (उच्च शिक्षा, गुरु-कृपा, भाग्य) में मंगल स्वराशि मेष में विराजमान हैं — नवमेश मंगल अपने ही भाव में हैं, यह शक्तिशाली स्थिति है। भाव-बल 9.99 और शोधित अष्टकवर्ग 13 बिंदु — **नवम भाव इस कुंडली के सबसे बलवान भावों में से एक है।** इसका अर्थ है कि उच्च शिक्षा, शोध, या किसी विशेष क्षेत्र की गहरी पढ़ाई में आपको स्वाभाविक भाग्य-सहयोग मिलता है। गुरु की दृष्टि भी नवम पर पड़ रही है — यह और भी शुभ है।

मुख्य बातें

- लग्न में युवा-अवस्था वाले गुरु आपकी बुद्धि और सीखने की क्षमता की असली पूँजी हैं — इसे कभी कम मत आँकिए।
- बुध बारहवें भाव में, शत्रु राशि में — वाणी और लेखन में क्षमता है, पर उसे बाहर लाने के लिए एकांत, अभ्यास और धैर्य चाहिए।
- नवम भाव बलवान है — उच्च शिक्षा और विशेषज्ञता के क्षेत्र में भाग्य का साथ मिलता है।
- D9 में बुध मकर के पाँचवें भाव में — गहराई से किया गया अध्ययन टिकाऊ फल देता है।
- गुरु की पंचम और नवम पर दृष्टि — विद्या और भाग्य दोनों भावों को शुभ बल मिल रहा है, जो इस कुंडली की विशेष ताकत है।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

एकोऽपि ज्ञार्यशुक्राणां लग्नात् केन्द्रगतो यदि ।

अरिष्टं निखिलं हन्ति तिमिरं भास्करो यथा ॥

बुध, गुरु या शुक्र में से एक भी लग्न से केन्द्र में हो, तो वह सारे अरिष्ट को वैसे मिटा देता है जैसे सूर्य अंधकार को।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय १०



बौद्धिक क्षमता व स्मृति

अ ध्या य 2

बौद्धिक क्षमता व स्मृति

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में बुद्धि का चित्र देखती हूँ तो एक बात तुरंत सामने आती है — **आपका मन गहरा सोचने वाला है, पर उसे एक ढाँचा चाहिए; बिना ढाँचे के यह बुद्धि बिखर जाती है।** लग्न में गुरु और पंचम भाव का बल — दोनों मिलकर एक विशेष प्रकार की समझ देते हैं, जो किताबी रट्टे से नहीं, चिंतन से काम करती है।

आपकी बुद्धि का असली स्वभाव

आपका लग्न सिंह है और लग्न में गुरु विराजमान हैं — मित्र राशि में, युवा अवस्था में, और षड्बल में 9.49 रूप के साथ, जो न्यूनतम अपेक्षित 6.5 से कहीं ऊपर है। **गुरु यहाँ पूरी ताकत से काम कर रहे हैं।** इसका सीधा अर्थ है कि आपकी बौद्धिक क्षमता का आधार विश्लेषण, तर्क और बड़े सिद्धांतों को समझना है। आप किसी भी विषय में "क्यों" और "कैसे" ढूँढते हैं — सतह पर रुकना आपके स्वभाव में नहीं।

पंचमेश भी गुरु ही हैं, और वे लग्न में बैठे हैं — यानी बुद्धि का स्वामी स्वयं को देख रहा है। पराशर के अनुसार ऐसी स्थिति में व्यक्ति की बौद्धिक पकड़ स्वाभाविक रूप से पक्की होती है। **और गुरु की दृष्टि पंचम भाव पर भी पड़ रही है** — यानी बुद्धि और पूर्व-पुण्य का भाव दोनों तरफ़ से सधे हुए हैं।

स्मृति — कहाँ मज़बूत, कहाँ कमज़ोर

स्मृति के लिए चंद्रमा और बुध — दोनों को देखती हूँ। चंद्रमा आपके चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि में हैं, जो उनकी नीच राशि है। षड्बल में 8.04 रूप — बल पर्याप्त है, पर अवस्था बाल है, यानी **फल का केवल चौथाई भाग मिलता है।** इसका सीधा असर यह है कि आपकी भावनात्मक स्मृति — कोई बात दिल को लगी, कोई दुख या खुशी का पल — वह बहुत गहरी और स्थायी होती है। पर तथ्यात्मक या क्रमिक स्मृति (जैसे तारीखें, नाम, सूचियाँ) में मन भटकता है।

बुध बारहवें भाव में कर्क राशि में हैं — शत्रु राशि में। बुध का काम है वाणी, तर्क और शब्द-स्मृति। **बारहवें भाव में शत्रु राशि में बुध यह कहते हैं कि पढ़ा हुआ जल्दी भूल जाता है अगर उसे दोहराया न जाए।** जो बात एक बार ध्यान से समझ ली, वह रहती है — पर जो रटा, वह उड़ जाती है। यह कमज़ोरी नहीं, एक विशेषता है — आपका मन "अर्थ" याद रखता है, "शब्द" नहीं।

नवांश (D9) में बुध मकर राशि के पाँचवें भाव में हैं — यह थोड़ा सहारा देता है। बुद्धि में व्यावहारिकता और धीरज आता है; जो धीरे-धीरे समझते हैं, वह पक्का बैठता है।

गुरु और बुध का सम्मिलित फल

गुरु और बुध — दो ग्रह जो मिलकर विद्या-बुद्धि का असली निर्माण करते हैं। आपकी कुंडली में **गुरु बलवान हैं और बुध दबे हुए।** इसका व्यावहारिक अर्थ समझिए:

- **जो काम गुरु से जुड़ा है** — दर्शन, भाषा की गहराई, कानून, अध्यापन, नीति, आध्यात्म — उसमें आपकी बुद्धि खिलती है।
- **जो काम बुध से जुड़ा है** — लेखन में तेज़ी, गणित की छोटी-छोटी बातें, हिसाब-किताब, विस्तृत टिप्पणी — उसमें समय और अभ्यास चाहिए।
- **बुध की दृष्टि छठे भाव पर है** — इसका एक रोचक असर यह है कि आप अपनी कमज़ोरियों का विश्लेषण बहुत गहराई से करते हैं। यह

गुण है, पर इससे कभी-कभी आत्म-आलोचना ज़रूरत से ज़्यादा हो जाती है।

अभी का समय — बुद्धि के लिए कैसा है

इस समय सूर्य महादशा में शनि की अंतर्दशा चल रही है (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक)। शनि आपके छठे भाव में स्वराशि और वक्री हैं — बल पर्याप्त है, अवस्था कुमार। **यह समय गहरे अध्ययन के लिए उपयुक्त है, पर मन को एकाग्र रखना कठिन लग सकता है।** शनि एकाग्रता माँगते हैं — और जो इस माँग को मान लेते हैं, उन्हें इसी दशा में सबसे ठोस बौद्धिक उपलब्धि मिलती है।

योगिनी में भद्रिका (बुध) चल रही है — जो बुद्धि, वाणी और लेन-देन की दशा है। **विंशोत्तरी और योगिनी के संकेत अलग-अलग हैं, इसलिए यह समय मिश्रित फल देने वाला है** — एक ओर बुद्धि जाग रही है, दूसरी ओर शनि अनुशासन माँग रहे हैं।

गोचर में गुरु अभी कर्क राशि में हैं (अक्टूबर 2026 तक) और आपके बारहवें भाव में हैं — **गुरु की दृष्टि पंचम पर पड़ रही है।** यह बुद्धि को भीतरी दिशा देता है; बाहरी चमक कम, भीतरी समझ गहरी।

मुख्य बातें

- **गुरु लग्न में युवा व बलवान** — बड़े सिद्धांत, तर्क और गहरी समझ आपकी असली ताकत है
- **बुध बारहवें भाव में** — रटने से नहीं, समझकर पढ़ने से स्मृति काम करती है; दोहराव ज़रूरी है
- **चंद्र नीच, बाल अवस्था** — भावनात्मक स्मृति गहरी, तथ्यात्मक स्मृति को अभ्यास चाहिए
- **अभी का समय मिश्रित** — शनि अनुशासन माँगते हैं; जो रोज़ थोड़ा-थोड़ा पढ़ेंगे, उन्हें इस दशा में सबसे अधिक मिलेगा
- **बुद्धि को तेज़ रखने के लिए** — **रोज़ कुछ नया पढ़िए जो अर्थ माँगे, रट नहीं; और जो पढ़ें उसे किसी को समझाने की कोशिश करिए** — यही गुरु और बुध दोनों को एक साथ सधाने का रास्ता है



उपयुक्त शिक्षा-क्षेत्र

अ ध्या य 3

उपयुक्त शिक्षा-क्षेत्र

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में जिस प्रकार के ग्रह-योग बने हैं, वे स्पष्ट संकेत देते हैं कि आपका मन किन विषयों में सबसे अधिक खिलता है और किन क्षेत्रों में श्रम करने पर भी फल देर से आता है। **ग्रहों की भाषा में कहूँ तो — आपके लिए वे क्षेत्र सबसे उपयुक्त हैं जिनमें विचार, तर्क, प्रबंधन और व्यापक दृष्टि की माँग हो।**

भाग्य और उच्च शिक्षा का द्वार — नवम भाव और मंगल

आपका नवम भाव — जो भाग्य, उच्च शिक्षा और दार्शनिक चिंतन का घर है — बहुत बलवान है। **नवमेश मंगल अपनी ही राशि मेष में नवम भाव में बैठे हैं**, यह स्थिति परंपरा में अत्यंत शुभ मानी गई है। शोधित अष्टकवर्ग में नवम भाव के 13 बिंदु हैं — यह इस कुंडली का दूसरा सबसे बलवान भाव है। इसका अर्थ यह है कि जहाँ गहराई से पढ़ना हो, जहाँ एक विषय को जड़ से समझना हो — वहाँ आपकी पकड़ स्वाभाविक रूप से मजबूत है।

मंगल जब नवम में स्वराशि में हो तो व्यक्ति में एक विशेष गुण आता है — **किसी भी क्षेत्र में "क्यों" पूछने की प्रवृत्ति**। यह प्रवृत्ति विधि (कानून), चिकित्सा-विज्ञान, इंजीनियरिंग, रक्षा-सेवाओं और शोध — इन सभी क्षेत्रों में अत्यंत काम की है। इसीलिए इनमें से कोई भी दिशा आपके लिए केवल "पसंद" नहीं, बल्कि कुंडली का स्वाभाविक संकेत भी है।

लग्न में गुरु — प्रबंधन, दर्शन और मानविकी की ओर झुकाव

लग्न में गुरु की उपस्थिति — और वह भी मित्र राशि में, युवा अवस्था में — एक विशेष दृष्टि देती है। **गुरु पंचमेश और अष्टमेश दोनों हैं**, और लग्न में बैठकर वे आपके पूरे व्यक्तित्व को रंग देते हैं। गुरु की दृष्टि सीधे पंचम (बुद्धि-विद्या) और नवम (उच्च शिक्षा) दोनों पर है।

इस योग से जो विषय सबसे अधिक जँचते हैं वे हैं —

- दर्शन, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास
- प्रबंधन और नीति-निर्धारण (MBA, लोक-प्रशासन, अंतरराष्ट्रीय संबंध)
- धर्म-शास्त्र, संस्कृत, ज्योतिष व प्राच्य विद्याएँ

नवांश (D9) में गुरु कन्या राशि के पहले भाव में हैं — यह वर्गोत्तम नहीं है, पर कन्या में गुरु विश्लेषणात्मक सोच को और पैना करते हैं। इसका मतलब है कि **जिन क्षेत्रों में व्यापक सोच के साथ-साथ विस्तार से आँकड़े और तथ्य भी देखने हों — जैसे अर्थशास्त्र, नीति-विश्लेषण या शोध — वहाँ आपकी क्षमता और भी निखरती है।**

बुध और शुक्र — भाषा, कला और व्यापार की परीक्षा

बुध द्वादश भाव में शत्रु राशि में हैं — इसका सीधा अर्थ यह नहीं कि भाषा या लेखन से दूर रहें; इसका अर्थ यह है कि **वाणिज्य, हिसाब-किताब और तकनीकी लेखन में प्रयास अधिक लगेगा, फल देर से आएगा।** चंद्र कुंडली में बुध नवम भाव में हैं — जो यह बताता है कि जब आप किसी विषय में मन लगाकर पढ़ते हैं, तब बुध की लेखनी चलती है।

शुक्र भी द्वादश में अस्त हैं — इसलिए **ललित कला, फैशन, सौंदर्य-उद्योग या शुद्ध रूप से मनोरंजन-आधारित शिक्षा में लंबे समय की**

माँग रहेगी और फल अनिश्चित। यह क्षेत्र वर्जित नहीं, पर यहाँ यात्रा अधिक कठिन है।

सूर्य और राहु का संकेत — नेतृत्व और तकनीक का संतुलन

सूर्य एकादश भाव में हैं और केतु के साथ मिलकर वेशी योग बना रहे हैं। **सूर्य-ग्रहण दोष** के कारण आत्मविश्वास कभी-कभी डगमगाता है, पर एकादश भाव का सूर्य यह भी कहता है कि जब आप किसी समूह या संस्था का हिस्सा बनते हैं, तब आपकी पहचान और सीखने की क्षमता दोनों बढ़ती हैं।

राहु पंचम भाव (धनु) में वक्री हैं और सूर्य की दृष्टि भी पंचम पर है — यह संयोग बताता है कि **प्रौद्योगिकी, डेटा-विज्ञान, सूचना-प्रबंधन या किसी नई, अपरंपरागत विद्या** में आपकी रुचि गहरी हो सकती है। राहु जहाँ बैठते हैं, वहाँ असाधारण लगन आती है — पंचम में यह लगन नई शिक्षा के लिए काम की है।

मुख्य बातें

- **सबसे उपयुक्त क्षेत्र:** विधि, प्रबंधन, लोक-प्रशासन, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शन, शोध, रक्षा-सेवाएँ — क्योंकि नवमेश मंगल स्वराशि में और लग्न में गुरु, दोनों इन्हीं की ओर इशारा करते हैं।
- **गुरु की नवम पर दृष्टि** यह भी कहती है कि उच्च शिक्षा (स्नातकोत्तर, शोध) आपके लिए विशेष रूप से फलदायी है — जितना आगे पढ़ेंगे, उतना अधिक लाभ।
- **बुध और शुक्र द्वादश में** होने से शुद्ध वाणिज्य, ललित कला या मनोरंजन-उद्योग में प्रयास अधिक लगेगा — इन क्षेत्रों को सहायक रखें, मुख्य नहीं।
- **अभी सूर्य महादशा और भद्रिका योगिनी (बुध)** चल रही है — यह समय किसी नए विषय को समझने, लिखने और संवाद करने के लिए अनुकूल है। **फ़रवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा** में जब बुध का प्रभाव और बढ़ेगा, तब नया पाठ्यक्रम या प्रमाण-पत्र लेने का यह अच्छा समय होगा।
- नवम भाव के 13 शोधित बिंदु और पंचम के 5 बिंदु मिलकर यह कहते हैं कि **व्यापक, गहरी शिक्षा में आपकी किस्मत अधिक साथ देती है, संकीर्ण तकनीकी प्रशिक्षण में कम।**



उच्च शिक्षा व विदेश योग

अ ध्या य 4

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में उच्च शिक्षा और विदेश — दोनों के लिए स्पष्ट संकेत हैं, पर इनका रास्ता सीधा नहीं, **मेहनत और सही समय के संयोग से खुलने वाला** है। नवम भाव में स्वराशि मंगल और द्वादश भाव की स्थिति — दोनों मिलकर एक ऐसी कुंडली बनाते हैं जहाँ बड़ी शिक्षा और विदेश-यात्रा का योग बना है, बस उसे पहचानना ज़रूरी है।

उच्च शिक्षा का द्वार — नवम भाव और मंगल

उच्च शिक्षा का कारक भाव नवम है, और आपके नवम भाव का स्वामी मंगल अपनी ही राशि मेष में नवम में बैठे हैं — यह **स्वगृही भावेश** की स्थिति है, जो नवम भाव को बल देती है। नवम भाव के शोधित अष्टकवर्ग बिंदु भी 13 हैं — इस कुंडली में यह दूसरा सबसे बलवान भाव है। इसका सीधा अर्थ है कि **आपके भाग्य और उच्च शिक्षा का क्षेत्र कमजोर नहीं है।**

पर मंगल की अवस्था मृत है — षड्बल तो 5.36 रूप (न्यूनतम 5 से थोड़ा ऊपर) है, पर फल नगण्य की स्थिति में है। इसका मतलब यह नहीं कि उच्च शिक्षा नहीं होगी — मतलब यह है कि वह **देर से और प्रयास से मिलेगी**, सहज और स्वतः नहीं। और आपकी आयु 34 वर्ष है — इस आयु में उच्च शिक्षा का अर्थ अक्सर कोई व्यावसायिक प्रमाणपत्र, कोई विशेष पाठ्यक्रम, या किसी क्षेत्र में गहन अध्ययन होता है — और यह बिल्कुल संभव है।

गुरु की दृष्टि नवम भाव पर पड़ रही है — लग्न में बैठे गुरु (जो युवा अवस्था में और मित्र राशि में हैं) नवम को देखते हैं। **गुरु की यह दृष्टि उच्च शिक्षा के योग को जीवित और सक्रिय रखती है।**

विदेश का योग — द्वादश भाव और गोचर गुरु

विदेश-यात्रा व विदेश में शिक्षा का संबंध द्वादश भाव से है। आपके द्वादश भाव में बुध और शुक्र — दोनों बैठे हैं। द्वादश भाव-बल 15.63 है — इस कुंडली का **सबसे बलवान भाव**। और मंगल की दृष्टि भी द्वादश भाव पर पड़ रही है। यह स्पष्ट करता है कि **विदेश से आपका गहरा संबंध बनता है** — चाहे वह शिक्षा हो, यात्रा हो, या किसी काम का विस्तार।

अभी गोचर में गुरु कर्क राशि में हैं — आपके जन्म-लग्न से बारहवें भाव में। गुरु का बारहवें भाव में गोचर परंपरा में विदेश-यात्रा, आध्यात्मिक यात्रा और बड़े खर्च का समय माना जाता है। **अक्टूबर 2026 तक गुरु यहीं रहेंगे** — इस अवधि में विदेश-संबंधी कोई भी निर्णय या प्रयास अधिक सार्थक हो सकता है।

नवांश से असली बल की परख

नवांश (D9) में गुरु कन्या राशि में लग्न में हैं — यह **वर्गोत्तम स्थिति** नहीं है, पर गुरु का नवांश लग्न में होना उनके फल को आंतरिक रूप से पक्का करता है। बुध नवांश में मकर राशि (पंचम भाव) में हैं — बुद्धि और अध्ययन की ऊर्जा नवांश में भी सक्रिय है।

समय — कब खुलेगा यह द्वार

अभी सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा चल रही है — फ़रवरी 2027 तक। शनि अंतर्दशा में बड़े निर्णय थोड़े भारी लगते हैं, विशेषकर विदेश या लंबी शिक्षा के। **फ़रवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा आएगी** — बुध वाणी, लेखन और विद्या के कारक हैं, और इस कुंडली में द्वादश के स्वामी भी हैं। यह अंतर्दशा दिसम्बर 2027 तक रहेगी। **यही वह खिड़की है जब उच्च शिक्षा, विदेश से जुड़ा पाठ्यक्रम या किसी नए क्षेत्र में प्रवेश सबसे अनुकूल रहेगा।** उस समय आप लगभग 35-36 वर्ष के होंगे — यह उम्र पेशेवर उच्च शिक्षा के लिए बिल्कुल सही है।

मुख्य बातें

- नवम भाव बलवान है (अष्टकवर्ग 13 बिंदु, स्वराशि मंगल) — उच्च शिक्षा का योग है, पर प्रयास माँगता है
- द्वादश भाव इस कुंडली का सबसे बलवान भाव है — विदेश से संबंध गहरा है
- गुरु की दृष्टि नवम पर और गोचर गुरु द्वादश में — अक्टूबर 2026 तक विदेश-प्रयास शुभ
- फ़रवरी से दिसम्बर 2027 (सूर्य-बुध अंतर्दशा) उच्च शिक्षा या विदेश-निर्णय का सबसे अनुकूल समय
- इस समय कोई एक ठोस लक्ष्य चुन लें — कुंडली रास्ता दे रही है, बस क़दम उठाना आपका काम है



शिक्षा में सफलता का समय

अ ध्या य 5

शिक्षा में सफलता का समय

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में बुद्धि और सीखने की क्षमता तो गहरी है — पर सफलता का समय एक जैसा नहीं रहता। कुछ वर्ष सीखने के होते हैं, कुछ उड़ान के। **आपके लिए अगले दो-तीन वर्ष सबसे महत्वपूर्ण मोड़ लेकर आ रहे हैं।**

अभी का समय — शनि की परीक्षा, पर नींव मज़बूत हो रही है

इस समय **सूर्य महादशा - शनि अंतर्दशा** चल रही है (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक — अभी आप लगभग 34 वर्ष के हैं)। शनि आपकी कुंडली में छठे भाव में स्वराशि मकर में हैं और वक्री भी हैं। शनि की अंतर्दशा में शिक्षा या किसी नई विद्या में जल्दी-जल्दी फल की अपेक्षा करना ठीक नहीं — यह समय **धीरज से नींव डालने का** है, शीर्ष छूने का नहीं।

पर यहाँ एक महत्वपूर्ण बात है — शनि की दृष्टि इस समय आपके बारहवें भाव पर पड़ रही है जहाँ बुध और शुक्र बैठे हैं। बुध विद्या के कारक हैं। यह दृष्टि बुध को दबाती है, इसलिए **फ़रवरी 2027 तक कोई बड़ा परीक्षा-फल या मान्यता मिलने में देरी स्वाभाविक है** — घबराएँ नहीं, यह समय की माँग है।

फ़रवरी 2027 से दिसम्बर 2027 — बुध अंतर्दशा का उजाला

यह वह खिड़की है जिसका सबसे अधिक लाभ उठाना चाहिए। सूर्य महादशा में **बुध अंतर्दशा (फ़रवरी 2027 से दिसम्बर 2027)** आएगी — तब आप लगभग 35 वर्ष के होंगे। बुध विद्या, वाणी और बौद्धिक कार्यों के कारक हैं। साथ ही **योगिनी दशा भद्रिका (स्वामी बुध) अगस्त 2029 तक चल रही है** — इसका स्वभाव भी बुद्धि, लेखन और वाणी में गति देने वाला है।

यानी फ़रवरी 2027 से एक ऐसा समय बनेगा जब **विंशोत्तरी और योगिनी — दोनों में बुध की ऊर्जा सक्रिय होगी।** पंचम भाव के स्वामी गुरु लग्न में युवा अवस्था में बैठे हैं, और **पंचम भाव को गुरु, सूर्य और केतु की दृष्टि** एक साथ पड़ रही है — यह शिक्षा व बौद्धिक सिद्धि के लिए अनुकूल संयोग है। इस काल में कोई प्रमाणपत्र, उच्च अध्ययन, लेखन-कार्य या विशेष प्रशिक्षण हाथ में लेना फलदायी रहेगा।

दिसम्बर 2027 से अप्रैल 2029 — केतु और शुक्र अंतर्दशा, मिश्रित संकेत

केतु अंतर्दशा (दिसम्बर 2027 से अप्रैल 2028) में मन भीतर की ओर जाएगा — गहरी साधना, आध्यात्मिक या दार्शनिक विषयों में रुचि बढ़ेगी, पर बाहरी मान्यता उतनी नहीं मिलेगी। यह समय चिंतन और शोध का है, पुरस्कार का नहीं।

शुक्र अंतर्दशा (अप्रैल 2028 से अप्रैल 2029) में सावधानी चाहिए — शुक्र आपकी कुंडली में बारहवें भाव में अस्त हैं और मना किए गए रत्नों में भी हैं। शुक्र की दशा में शिक्षा में अधिक ऊर्जा लगे, फल कम मिले — यह संभव है। इस दौरान व्यर्थ के पाठ्यक्रमों में समय न गँवाएँ।

अप्रैल 2029 के बाद — चंद्र महादशा का नया अध्याय

अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा आरंभ होगी (तब आप लगभग 37 वर्ष के होंगे)। चंद्र चतुर्थ भाव में हैं — चतुर्थ भाव शिक्षा की नींव और मानसिक संतोष का घर है। हालाँकि चंद्र नीच राशि में हैं और बाल अवस्था में, इसलिए फल धीरे-धीरे मिलेगा। पर **गोचर में गुरु अभी कर्क राशि में हैं और आपके बारहवें भाव में** — यह विदेश या दूरस्थ शिक्षा की संभावना बनाते हैं, जो चंद्र महादशा के आरंभ में साकार हो सकती है।

मुख्य बातें

- **फ़रवरी 2027 तक** शिक्षा में धैर्य रखें — शनि की परीक्षा का समय है, नींव डालने का।
- **फ़रवरी से दिसम्बर 2027** सबसे अनुकूल अवधि है — बुध अंतर्दशा और भद्रिका योगिनी दोनों मिलकर बौद्धिक कार्यों को गति देंगी।
- पंचम भाव पर गुरु, सूर्य और केतु की दृष्टि — **बुद्धि और विद्या का योग पक्का है, बस समय का इंतज़ार करें।**
- **दिसम्बर 2027 से अप्रैल 2028** गहन अध्ययन व शोध के लिए उपयुक्त, बाहरी पुरस्कार के लिए नहीं।
- **अप्रैल 2029** के बाद चंद्र महादशा में शिक्षा का एक नया अध्याय खुलेगा — विशेषकर भावनात्मक सीख और मन की शांति के रूप में।



बाधाएँ व समाधान

अ ध्या य 6

बाधाएँ व समाधान

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में सीखने की क्षमता गहरी है — पर कुछ ग्रह-स्थितियाँ ऐसी हैं जो उस क्षमता को पूरी तरह बाहर नहीं आने देतीं। इन बाधाओं को समझना और उनका रास्ता निकालना — यही इस अध्याय का काम है।

बुध का द्वादश भाव में होना — वाणी और एकाग्रता की चुनौती

विद्या का कारक बुध आपके द्वादश भाव में कर्क राशि में है — शत्रु राशि में। द्वादश भाव व्यय, एकांत और अदृश्य चीजों का भाव है। **इसका सीधा अर्थ है कि आपकी बौद्धिक ऊर्जा बाहर व्यक्त होने में अटकती है** — जो आप भीतर से जानते हैं, वह ठीक से बोल नहीं पाते, लिख नहीं पाते, या परीक्षा के क्षण में उतर नहीं पाता। बुध की अवस्था कुमार है — अर्थात् आधा फल। इसलिए यह बाधा पूर्ण नहीं, पर ध्यान देने योग्य अवश्य है।

- इसका समाधान: **रोज़ सुबह जो पढ़ें, उसे ज़ोर से बोलकर दोहराएँ** — यह बुध को सक्रिय करने का सबसे सरल तरीका है। बुधवार को हरी मूँग का सेवन या दान लाभकारी रहेगा।

राहु का पंचम भाव में होना — मन की भटकन और भ्रम

पंचम भाव बुद्धि, विद्या और एकाग्रता का भाव है। यहाँ राहु वक्री है — और राहु सदा वक्री चलता है। **राहु की यह स्थिति मन को बिखेरती है** — एक विषय पर टिकना कठिन लगता है, ध्यान बार-बार भटकता है, और कभी-कभी ऐसे रास्ते आकर्षित करते हैं जो वास्तव में आपके काम के नहीं होते।

सूर्य की दृष्टि भी पंचम पर पड़ रही है, और केतु की भी — इससे पंचम भाव पर एक साथ तीन प्रभाव हैं। यह बौद्धिक उलझन को और गहरा करता है।

- इसका समाधान: **केतु का उपाय यहाँ सबसे कारगर है — रोज़ 10-15 मिनट का मौन या ध्यान।** जब मन शांत होता है, राहु की बेचैनी घटती है और पंचम भाव अपना शुभ फल देने लगता है।

शुक्र का अस्त होना — सौंदर्यबोध और सृजनात्मक विद्या में बाधा

आपके तृतीय और दशम भाव के स्वामी शुक्र द्वादश भाव में अस्त हैं — अर्थात् सूर्य की रोशनी में दब गए हैं। **जो विद्याएँ सृजनात्मकता, कला, संगीत या भाषा से जुड़ी हैं, वहाँ आप अपनी पूरी क्षमता नहीं दिखा पाते** — न इसलिए कि योग्यता नहीं, बल्कि इसलिए कि भीतर का आत्मविश्वास दब जाता है।

• इसका समाधान: शुक्रवार को सफ़ेद वस्तु (दही, चावल, सफ़ेद कपड़ा) का दान करें। और जो सृजनात्मक काम करते हों, उसे नियमित रूप से करते रहें — रुकिए मत।

अभी का समय — शनि की अंतर्दशा और उसका संदेश

अभी सूर्य महादशा में शनि की अंतर्दशा फ़रवरी 2027 तक चल रही है। शनि छठे भाव में स्वराशि में हैं — वक्र। **यह समय धैर्य और अनुशासन माँगता है।** जो पढ़ाई या सीखने का काम अभी धीमा लग रहा हो, वह रुका नहीं है — बस शनि की रफ़्तार से चल रहा है।

फ़रवरी 2027 से बुध की अंतर्दशा आएगी — तब आपकी बौद्धिक शक्ति अधिक व्यक्त होगी, बोलने-लिखने में सहजता आएगी।

मुख्य बातें

- **बुध द्वादश में है** — जो जानते हैं, उसे व्यक्त करने का अभ्यास रोज़ करें
- **पंचम में राहु** — एकाग्रता के लिए रोज़ 10-15 मिनट मौन अनिवार्य
- **शुक्र अस्त** — सृजनात्मक विद्या में आत्मविश्वास बनाए रखें, रुकें नहीं
- **अभी शनि की अंतर्दशा** — धीमापन बाधा नहीं, आधार बन रहा है
- **फ़रवरी 2027 से बुध की अंतर्दशा** — तब वाणी, लेखन और विद्या में स्पष्ट सुधार आएगा



शिक्षा हेतु उपाय

अ ध्या य 7

शिक्षा हेतु उपाय

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में बुद्धि का दीपक जला तो है — पर उसे सही हवा और तेल दोनों चाहिए। यहाँ वही उपाय हैं जो आपकी अपनी कुंडली की माँग से निकले हैं, सबको दिए जाने वाले सामान्य सुझाव नहीं।

गुरु के साथ चलना — यही सबसे बड़ा उपाय है

आपके लग्न में गुरु विराजमान हैं — मित्र राशि में, युवा अवस्था में, पूरा बल लेकर। **पंचम भाव (बुद्धि-विद्या) के भावेश भी गुरु ही हैं।** यह एक बड़ी शक्ति है — पर शक्ति तभी काम करती है जब उसके साथ चलें।

गुरु के साथ चलने का अर्थ है:

- **रोज़ कुछ पढ़ना जो मन को बड़ा करे** — समाचार नहीं, बल्कि कोई विचारपूर्ण पुस्तक, लेख या विषय। कम-से-कम बीस मिनट।
- **किसी को कुछ सिखाना** — चाहे घर में हो, कार्यस्थल पर हो या किसी छोटे को। गुरु सिखाने से बढ़ता है।
- **भोजन व वाणी में संयम** — गुरु का यह स्वभाव है। जो ज़रूरी न हो वह बोलना कम करें।
- **बड़ों का आदर** — गुरु, शिक्षक, अनुभवी व्यक्तियों से जुड़े रहना। यह संयोग बनाता है।

बुध की पीड़ा — वाणी और एकाग्रता के लिए विशेष ध्यान

बुध द्वादश भाव में हैं, शत्रु राशि में — विद्या के कारक ग्रह को यह स्थान सहज नहीं है। **एकाग्रता बिखरती है, मन भटकता है, जो पढ़ा वह स्थिर नहीं रहता।**

इसके लिए:

- **रोज़ सुबह पाँच मिनट मौन बैठकर एक विषय पर ध्यान केंद्रित करें** — धीरे-धीरे यह समय बढ़ाएँ।
- **ज़ोर से पढ़ने का अभ्यास करें** — बुध वाणी का ग्रह है, मुख से निकली बात मन में अधिक गहरी उतरती है।
- **लिखने की आदत डालें** — जो भी सीखें, उसे अपने शब्दों में एक पृष्ठ पर लिखें। बुध को यह बहुत पसंद है।
- **बुधवार को हरे रंग का कुछ खाएँ** — हरी सब्जी, मूँग — और उस दिन झूठ व अतिशयोक्ति से पूरी तरह बचें।

माणिक — इस समय का उपयुक्त रत्न

अभी **सूर्य महादशा** चल रही है। सूर्य आपके लग्नेश हैं और लग्न से एकादश भाव में बैठे हैं — पर अवस्था मृत है, इसलिए उनकी आवाज़ दबी हुई है। **माणिक धारण करने से सूर्य की यह दबी शक्ति ऊपर आती है** — आत्मविश्वास बढ़ता है, ध्यान केंद्रित होता है, निर्णय-क्षमता सुधरती है।

यह आपका जीवन-रत्न भी है — इसलिए और भी उचित। स्वर्ण में, अनामिका में, रविवार को धारण करें।

केतु का संदेश — एकांत और ध्यान

केतु आपके एकादश भाव में हैं। **केतु की दशा न हो, फिर भी उनका संदेश यही है — जो सीखना है वह भीतर से आएगा, बाहर की भागदौड़ से नहीं।** रोज़ दस मिनट का मौन या ध्यान — किसी शांत कोने में, बिना फ़ोन के — मन को उस गहराई तक ले जाता है जहाँ असली सीख टिकती है।

मुख्य बातें

- **गुरु लग्न में, युवा अवस्था में** — उन्हें प्रतिदिन पढ़ने, सिखाने और संयम से सीचें।
- **बुध द्वादश में** — ज़ोर से पढ़ना, लिखना और मौन अभ्यास सबसे ज़रूरी।
- **माणिक** — सूर्य महादशा में, जीवन-रत्न होने से, अभी सबसे उपयुक्त; स्वर्ण में, रविवार को।
- रोज़ बीस मिनट पढ़ना और पाँच मिनट मौन — यह दिनचर्या ही आपका सबसे बड़ा उपाय है।
- **किसी को सिखाइए** — गुरु सिखाने से बढ़ता है, और आपकी कुंडली में वही सबसे बड़ा ग्रह है।

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ शिक्षा रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।